दोषी कौन

अनिता ठेनुआ

मुझे यहां का माहौल कत्तई पसन्द नहीं है, सब काम मजबूरी में करती हूं। हम तो रखैल जैसी हैं। सरकार को हमारे लिए कुछ करना चाहिए। मैं उस रास्ते पर नहीं चलूंगी जहां कांटे ही कांटे हों।

पैसा तो कमाना चाहती हूं पर इस काम के ज़रीए नहीं। कोई दूसरा काम करना चाहती हूं। लेकिन समाज हमें स्वीकार नहीं करता, उसी पुराने रूप से देखता है, तो फिर हमारे पास क्या रास्ता रह जाता है?

मैं शादी करके घर बसाना चाहती हूं, परन्तु मां-बाप कहते हैं, अपने रस्मो-रिवाज़ पूरे करो।

ये सवाल हैं आपके और मेरे जैसी कुछ लड़कियों के। हमारे समाज ने हमेशा हमारे पैरों में बेड़िया डालीं हैं, कुछ इज्ज़त-परिवार के नाम से, कुछ प्यार-दुलार के नाम से, तो कुछ रस्मो-रिवाज के नाम से।

राजस्थान में एक गांव है लुधावई। यहां बेडिया जाति के लोग रहते हैं। यहां पर लड़कियों के जन्म पर दुःख नहीं, खुशियां मनाई जाती हैं। लड़के-लड़की दोनों के पालन-पोषण में किसी भी तरह का भेदभाव नहीं बरता जाता। मां की देखरेख लड़के या लड़की, कुछ भी जनने पर एक समान होती है। अन्य जातियों/इलाकों में सिर्फ़ लड़के की नाल जमीन में गाढ़ी जाती है। पर यहां दोनों की नाल पैदा होते ही गाढ़ने का चलन है।

लड़की को ज्यादा महत्व—प्यार या स्वार्थ

आप सोच रहे होंगे, बड़ी अच्छी बात है कि लड़की को लड़के से ज्यादा महत्व दिया जाता है। आखिर यही तो हम चाहते हैं। पर क्या आप जानते हैं ऐसा क्यों है। यहां के रिवाजानुसार घर को चलाने की जिम्मेदारी लड़की की होती है। पढ़-लिखकर नौकरी करके नहीं बल्कि एक रिवाज को आगे बढ़ाने के लिए।

ग्यारह वर्ष की हो जाने पर लड़की से पूछा जाता है कि वह क्या चाहती है, शादी करना या धंधा करना। घरवालों की परेशानी और दबाव को देखते हुए अकसर लड़कियां धंधा करना मंजूर कर लेती हैं।

इसके बाद लड़कियों को शिक्षा दी जाती है। शिक्षा मां-बाप अपने पैसे पर दिलाते हैं। इसके तहत नृत्य, संगीत, गज़ल गाना, शेर-शायरी, हाव-भाव से रिझाना आदि शामिल होते हैं।

इस व्यवस्था को बदलने का सबसे पहला कदम है हमें अपने आप को बदलना होगा। अगर अन्याय करना गुनाह है तो अन्याय सहना भी अपराध है। जब हम बदलेंगे तो यह समाज बदलेगा और जमाना बदलेगा।

गुजरात, अहमदाबाद, दिल्ली, बरेली जैसे बड़े शहरों में यह तालीम दी जाती है। पर बंबई इस तालीम का गढ़ है।

नाच-गाने के प्रशिक्षण के बाद नथ पहनने की पहली रस्म होती है। नथ पहनाने वाला व्यक्ति कोई जेठ या पैसे वाला होटल का मालिक होता है। नथ की रस्म के समय वह व्यक्ति गहने, कपड़े और रुपये भी लाता है। साथ ही वह पैर के बिछुए अपने हाथों से लड़की को पहनाता है। यह गहने-जेवर लड़की के होते हैं। इस रस्म के बाद लड़की उस खरीददार की हो जाती है। पहली रात वह लड़की अपने मालिक के साथ गुजारती है। फिर मालिक चाहे उसे अपनी रखैल बनाकर रखे या फिर ठेकेदार की तरह उससे धंधा कराए। इसके साथ लड़कियों को होटल में नाचना, गाना, ग्राहकों को रिझाना भी पड़ता है।

लड़कियों को पैसा रोज़ मिलता है। इससे उनके घर का खर्चा चलता है। यह पैसा थोड़ा होता है। हां, अगर कोई ग्राहक खुश होकर लड़की को कोई कीमती तोहफा या जेवर देता है तो वह तोहफा भी मालिक ले लेता है। यानि पूरी मेहनत लड़की की होती है पर कमाई पर अधिकार उसका नहीं होता। इस तरह का सिलसिला तब तक चलता है जब तक लड़की पैंतीस साल की नहीं हो जाती।

पैंतीस साल की हो जाने के बाद लड़की धंधा

ठान ले अगर लड़की

नम्रता को असहायता न कहो
गोया कि मुंहजोर नहीं होती लड़की
ठान ले अगर कुछ करने का
कर दिखाएगी, कमजोर नहीं होती लड़की
मौका मिले उसे तो वह
संभाल सकती है बागडोर
पुरुषों को भी पीछे खींच लायेगी
थामे वह अपनी मजबूत डोर
अपनी पहचान आप बनायेगी
शहजोर नहीं होती लड़की

संस्कारों में पलकर लड़की
सदा लाजवंती रहती है
ईंट पत्थर की चारदीवारी को
घर बनाया करती है
पुरुष अत्याचार करे फिर भी
प्रतिकार नहीं करती लड़की

यह न भूलो मानव तुमने
उसी की कोख से जन्म लिया
फिर नारी को क्यों पद पद पर
निर्वासित और अपमानित किया
इंसाफ के लिये लड़ेगी
अन्याय अब नहीं सहेगी लड़की।

नीर शबनम